भाकृअनुप–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

सरकारी काम–काज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा इसके प्रभावी प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में 14 से 28 सितम्बर, 2015 के दौरान "हिन्दी पखवाड़ा" का अयोजन किया गया जिसका उद्घाटन संस्थान के माननीय निदेशक, डा. प्राण गोबिन्द कर्मकार जी ने की। उद्घाटन समारोह में संस्थान के सभी वर्ग के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। निदेशक महोदय ने अपने अभिभाषण में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से आह्वान किया कि यह संस्थान 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद भी हिन्दी पत्राचार में अपेक्षित वृद्धि हेतु हमें पूरी मन एवं निष्ठा से प्रयास करना होगा। हमें रोज अपने दैनिक कार्यों में यथासंभव राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए, तभी हम लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ सकते हैं। इसका प्रारंभ उपस्थिति पंजिका में हिन्दी में हस्ताक्षर कर करना चाहिए। इस विशाल बहुभाषी देश में कोई एक सम्पर्क भाषा यदि हो सकती है तो वह हिन्दी ही है जो हमारी पुस्तैनी धरोहर है। हमें अपनी इस धरोहर को विकसित कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी पहचान बनानी है। इसके लिए हम सभी को अपने प्रयासों में और गति लाने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि/वक्ता के तौर पर आमंत्रित श्रीमती रीता भट्टाचार्य, पूर्व मुख्य प्रबंधक, राजभाषा विभाग, यू.बी.आई., प्रधान कार्यालय, कोलकाता ने अपने व्याख्यान में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास, संवैधानिक व्यवस्था, हिंदी प्रयोग के कार्यान्वयन संबंधी नियम–अधिनियमों के अनुपालन और कार्यालय में हिंदी प्रयोग की अनिवार्यता की जानकारी दी। डा. सुब्रत सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने संबोधन में सरकारी कामकाज में सरल और सहज हिंदी के प्रयोग पर बल दिया तथा संस्थान में लागू हिन्दी प्रोत्साहन योजना में सभी श्रेणी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भाग लेने का आग्रह किया। डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने अपने संबोधन में कहा कि हिन्दी में कार्य एवं हिन्दी प्रसार हेतु प्रत्येक कर्मचारी को सिर्फ पखवाड़ा में ही नहीं बल्कि दैनिक कार्यालयीन कार्यों में भी इसके प्रयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। डा. कुणाल मण्डल, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने कहा कि राजभाषा का प्रयोग हम सबको यथासंभव करना चाहिए साथ ही

हिंदी की महत्ता दिन–ब–दिन बढ़ाने में हम सबकी अहम भूमिका होनी चाहिए। डा. सितांशु सरकार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी भाषा सीखने से हम कार्यालय के कार्य को करने के साथ–साथ हर प्रांत और हर क्षेत्र में अपनी अनुसंधान उपलब्धियों को आसानी से पहुंचा सकते हैं। डा. रीतेश साहा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यालय प्रधान ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी को बढ़वा देने के लिए "हिंदी पखवाड़ा" मनाना ही काफी नहीं है बल्कि हिन्दी में काम करने की लगन एवं तत्परता को बढ़ाना आवश्यक है। हिन्दी दिल से बोली जाने वाली भाषा है अतः इसे दिल से अपनाने की जरूरत है। उद्घाटन समारोह में संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिन्दी पख़वाड़ा : समापन समारोह रिपोर्ट

"हिन्दी पखवाड़ा" समापन समारोह का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर, 2015 को किया गया। इस अवसर पर श्रीमती पूनम दीक्षित, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, निजाम पैलेस, कोलकाता को मुख्य अतिथि/वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक महोदय, डा. पी. जी. कर्मकार ने की तथा इस अवसर पर डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन, डा. जीबन मित्र, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार, डा. एस. सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा, डा. कुणाल मण्डल, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं डा. रीतेश साहा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यालय प्रधान भी मंचासीन थे। निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने पर बल दिया। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। हर गांव में, हर कदम पर तरह–तरह की भाषायें बोली जाती हैं उनमें हिंदी एक ऐसी भाषा है जो प्रत्येक गांव तथा शहर में बोली अथवा समझी जाती है। डा. एस. सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने सभागार में उपस्थित समस्त सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में निष्पादित करें ताकि संस्थान

के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण स्थापित हो सके। डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने कहा कि राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए सभी को आगे बढ़कर प्रयास करना होगा। डा. जीबन मित्रा, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार ने अपने अभिभाषण में कहा कि हमारा दायित्व है कि हम हिंदी का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार करें और अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें ताकि हमारा राजभाषा के प्रति रूचि बरकरार रहे। डा. रीतेश साहा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कार्यालय प्रधान ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के महत्व को रेखांकित किया तथा सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए आह्वान किया कि वे अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर अपने कर्तव्य का पालन करें। मुख्य अतिथि एवं वक्ता, श्रीमती पूनम दीक्षित ने अपने भाषण में हिंदी भाषा के महत्व, उसकी सरलता, सहजता आदि विषयों के ऊपर विस्तार से प्रकाश डाला तथा उन्होंने कहा कि हिंदी में काम करने से इसमें आने वाली कठिनाईयां स्वतः दूर हो जाएंगी अतः केवल प्रयास करते रहने की आवश्यकता है। अंत में निदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़ा के सफल आयोजन हेतु हिन्दी कक्ष से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों तथा अन्य प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सदस्यों, प्रतियोगिताओं के परीक्षक/निरीक्षक के रूप में कार्य करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों, वरि. वित्त एवं लेखा अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी तथा सभागार में उपस्थित अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। साथ ही हिन्दी पखवाड़ा के दौरान संस्थान में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों के मध्य क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र का संवितरण संस्थान के निदेशक, डा. प्राण गोबिन्द कर्मकार, मुख्य अतिथि श्रीमती पूनम दीक्षित तथा मंचासिन अन्य गणमान्य व्यक्तियों के कर कमलों द्वारा किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन एवं समापन सत्र का सफल संचालन डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्ड़ेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने श्री मनोज कुमार राय, सहायक के सहयोग से किया। कार्यक्रम का समापन डा. आत्मा नन्द त्रिपाठी, वैज्ञानिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।